पाखण्डी बाबाओंसे सावधान !

(पाखण्डी साधु, सन्त एवं महाराज तथा ढोंगी शंकराचार्य सहित)

अनुक्रमणिका

[कुछ वैशिष्ठ्यपूर्णसूत्र (मुद्दे) '*' इस चिन्हसेदर्शाए गए हैं।]

अध्याय १

व्यक्तिगत जीवन

१. धर्माचरण न करना १६

२. अनुचित आचरण १६

* अस्वच्छता फैलाना १६
* उज्जैनके एक आश्रममें टीवीपर हिन्दी चलचित्र देखते हुए विश्राम करनेवाले महन्तोंके शिष्य और एक साधु! १८
* षड्रिपुओंको नियन्त्रणमें न रखनेवाले सन्त १८
* हास-परिहास कर सन्तोंका अनादर करना १९
* एक आश्रमके एक विकलांग उन्नतसे मिलने आए एक स्वामीजी का अनुचित आचरण २०
* सन्तोंके आचरणके विषयमें अन्धश्रद्धा न रखें!

३. धूर्तता २४

४. भगवावस्त्रधारी पाखण्डी बाबा २४

* पाखण्डी बाबा बननेकी प्रक्रिया २४
* एक पाखण्डी बाबाका धार्मिक कृत्य करनेके निमित्त आश्रममें प्रवेश करनेका प्रयत्न ! २५
* सन्त अखाडा परिषद, पाखण्डी बाबाओंकी सूची घोषित करेगा ! २७

अध्याय २

भक्तोंके साथका और सामाजिक जीवन

१. लोकैषणा (सामाजिक प्रतिष्ठा की कामना) ३०

* सत्ताके लोभमें पडकर प्रत्यक्ष अपने गुरुकी अवज्ञा कर साधनामार्गसे दूर हुए एक महन्त ! ३०
* धर्मप्रसारके लिए नहीं; अपितु दिखावटी ठाटबाट कर धनका अपव्यय करनेवाले साधु ! ३०
* हिन्दू धर्मग्लानिकी अवस्थामें लोकैषणा सम्भालनेवाले तथाकथित हिन्दुत्वनिष्ठ सन्त ! ३१
* भक्तोंके साथ नहीं; अपितु लोकैषणाके लिए प्रसिद्ध व्यक्तियोंके साथ छायाचित्र खिंचवानेवाले महाराज ! ३१

२. अहंकार होना ३४

* व्यासपीठपर अपना आसन अन्योंसे ऊंचा रखनेका हठ करनेवाले एक मुनि ३५
* धर्मसभाके समय केवल वक्ताओंके लिए आरक्षित व्यासपीठ पर बैठनेका हठ कर उधम करनेवाले अहंकारी धर्माचार्य ! ३५

३. अपने नामका मन्त्र देना ! ४०

४. पाखण्डी तान्त्रिक साधु ४०

* तान्त्रिक उपासना करनेवाले एका बाबामें सन्तत्वका अभाव दर्शानेवाले कुछ प्रसंग ४१

५. तथाकथित चमत्कार एवं सिद्धि ४५

६. आर्थिक लाभकी ओर ध्यान ४७

* विधिके लाभसे लोगोंको वंचित रखनेवाले तीर्थक्षेत्रके महाराज (साधु) एवं पुजारी ४८
* धर्मके नामपर श्रद्धालुओंको लूटनेवाले ढोंगी साधु ! ४९
* उच्च पदस्थ अधिकारियोंके परिचयका अनुचित उपयोग कर उन्हें ठगनेवाले पाखण्डी साधु ! ५०
* ईश्वरप्राप्तिके लिए नहीं, धनप्राप्तिके लिए अध्यात्मका आश्रय लेनेवाले

धनलोभी पाखण्डी साधु-सन्त ! ५४
७. गुण्डा प्रवृत्तिके साधु ५८
* गुण्डा प्रवृत्तिके साधु बननेकी प्रक्रिया ५८
* देवताके चित्र/मूर्ति के सामने अनाचार करनेवाले ढोंगी साधु ! ५८
८. बनावटी (नकली) शंकराचार्य ६१
* ढोंगी शंकराचार्य, राजनीतिक दल एवं प्रचारमाध्यमों की देन ! ६४
९. अशोभनीय आचरणसे हिन्दू सन्त और धर्मपर कालिख पोतनेवाले तथाकथित स्वामी, साधु और महाराज ६५
* व्यभिचारी ढोंगी स्वामी और साधु ६६
* उपायोंके नामपर अशोभनीय वर्तन करना ६६
१०. तथाकथित साधु-सन्तों का पाखण्ड ऐसे उजागर करें ! ७३
११. सर्वसाधारण व्यक्ति, सूक्ष्म आयामके ज्ञानी, ७०% स्तरके सन्त तथा उपाय करनेवाले एक महाराजकी साधनाके विविध प्रकार ७७
१२. (कहते हैं) 'देशमें २५ लाख साधु हैं !' ७८
१३. बहुसंख्य सन्तोंमें अनेक दोष होनेसे सन्त-संगठन असम्भव ! ७८
१४. खरे साधु-सन्तों से विनम्र प्रार्थना ! ८१

भूमिका

'जिसकी कथनी और करनी एक समान हो, वह वन्दनीय है । इसके उत्तम उदाहरण हैं सन्त । सन्तोंका आचरण सदैव आदर्श, अनुकरणीय और समाजके लिए मार्गदर्शक होता है । उनके आचरण और मार्गदर्शन का अनुसरण कर अनेक लोग परमार्थके मार्गपर मार्गक्रमण करते हैं तथा ईश्वरकी भक्ति करते हुए ईश्वरसे एकरूप होते हैं; परन्तु वर्तमान कलियुगमें समाजको पारमार्थिक मार्गदर्शन करनेवाले ऐसे सन्त दुर्लभ हैं । उसके स्थानपर प्रतिष्ठा और सम्मान के लोभी तथाकथित सन्त समाजका दिशादर्शन करनेके स्थानपर उसे भ्रमित करते दिखाई देते हैं ।

साधु अर्थात त्याग और प्रीति का संगम ! ईश्वरप्राप्तिके लिए संसारसे मुंह मोडकर वैराग्यवृत्ति धारण कर संन्यासी बने व्यक्तिके प्रति समाजके मनमें आदरकी भावना होनी चाहिए; परन्तु वर्तमानमें साधुकी उपाधि धारण करनेवाले कुछ स्वार्थी लोगोंमें प्रसिद्धीका लालच दिखाई देता है । तीव्र अहंभाव और लोकैषणा, ईश्वरप्राप्तिके स्थानपर धनप्राप्तिकी ओर ध्यान, ऐसे अनेक दुर्गुणोंसे भरे ये तथाकथित साधु, सन्त, बाबा, महाराज आदिके उदाहरण इस ग्रन्थमें दिए हैं । लोकैषणा, अहंकार, लोभ और ईर्ष्या से ग्रस्त इन साधु-सन्तों का सेवाकार्य, त्याग और भक्ति केवल दिखावा करने और अन्योंसे प्रशंसा प्राप्त करने के लिए होता है ।

भगवे वस्त्र त्याग, वैराग्य और अनासक्ति के प्रतीक हैं; परन्तु भगवे वस्त्र धारण करनेवाले कुछ लोगोंकी आसक्ति अल्प होती दिखाई नहीं देती । ऐसे तथाकथित साधु-सन्त वर्तमानकाल में अथवा आगे कभी हिन्दू धर्मके लिए कुछ त्याग करेंगे, ऐसी अपेक्षा करना ही व्यर्थ है । इसलिए समाजमें यह भ्रान्ति फैल रही है कि 'साधु-सन्त बनना धन कमानेका सरल मार्ग अथवा उपजीविकाका एक अच्छा साधन है ।' जिन लोगोंको अपने आचरणसे समाजको त्याग और अनासक्ति की शिक्षा देनी चाहिए, उनका इस प्रकारका दुराचरण और निंद्य प्रदर्शन, समाजको धार्मिकताकी ओर मोडनेके स्थानपर धर्मसे परावृत्त कर पाखण्डी साधु बननेको प्रोत्साहित करता है ।

अपने अनुचित और अशोभनीय आचरणके कारण जनमानसमें आदरणीय साधु-सन्तों की प्रतिमा कलंकित करनेवाले तथाकथित स्वामी, साधु और महाराज के विषयमें हुए विविध अनुभव इस ग्रन्थमें दिए गए हैं । तथाकथित और पाखण्डी साधु-सन्तों के व्यवहारसे व्यक्त होनेवाले इस विरोधाभासके कारण सर्वसामान्य हिन्दू धर्मसे दूर जा रहे हैं, नास्तिक बन रहे हैं और भावी पीढीके लिए अध्यात्म उपहासका विषय बनता जा रहा है । सामान्य जनताके मनमें साधु-सन्तों की प्रतिमा कलुषित कर ये पाखण्डी एक प्रकारसे हिन्दू धर्मका घोर अनादर कर रहे हैं एवं स्वयंके साथ हिन्दू समाजको भी विनाशकी खाईमें ढकेल रहे हैं । लोगोंकी श्रद्धापर आघात करनेवाले ऐसे पाखण्डियोंको रोकनेके लिए अध्यात्मके अधिकारी व्यक्तियोंको अर्थात खरे साधु-सन्तों को अब आगे बढकर ढोंगी साधुओंका वास्तविक स्वरूप समाजके सामने उजागर करना चाहिए । यह कालकी आवश्यकता है ।

यह ग्रन्थ पढकर हिन्दू धर्मीय कुछ पाखण्डी साधु-सन्तों और ढोंगी शंकराचार्योंको पहचान पाएंगे । 'हिन्दू स्वयं साधना करें तथा समाजको श्रद्धाहीन और अधर्माचरणी बनने हेतु प्रोत्साहित करनेवाले ऐसे पाखण्डियोंको पहचानकर खरे साधु-सन्तों के मार्गदर्शनमें अपना व्यावहारिक और पारमार्थिक जीवन व्यतीत करें तथा अपने जीवनको सार्थक बनाएं', ऐसी ईश्वरके चरणोंमें प्रार्थना है ! - **संकलनकर्ता**